A review paper, an analytical study of the status and related problems of Paramarsh Chhatri Committees in secondary school (with reference to Sitamani district)

एक समीक्षा पत्र माध्यमिक विद्यालय में परमार्श छत्री समितियों की स्थिति और संबन्धित समस्यायो का विश्लेखनात्मक अध्ययन (सीतामणि जिले के संदर्भ में)

मधु कुमारी[1]ए डॉ. धीरज शिंदे[2]ए

मधु कुमारी, शोधार्थी, श्री सत्य सांई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विष्वविद्यालय, सीहोर
डॉ॰ धीरज शिंदे, सह–प्राध्यापक, श्री सत्य सांई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विष्वविद्यालय, सीहोर

सार

आजकल हम शिक्षा शब्द का प्रयोग अनेक रूपों तथा विभिन्न सन्र्दभों में करते है। शिक्षा का क्षेत्र तथा सीमायें बड़ी विस्तृत और व्यापक हो गई है। साधारण शब्दों में जिसे औपचारिक और अनौपचारिक स्वरूप कहा जाता है। शिक्षण सस्थाओं में जो ज्ञान तथा अनुभव एक निश्चित प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रदान किया जाता है वह शिक्षा का औपचारिक स्वरूप है जबकि परिवार समुदाय तथा बाह्य पर्यावरण से जो ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त होता है, वह अनौपचारिक स्वरूप है। एक समय था जबकि शिक्षा के साधन के रूप में केवल विद्यालय एवं शिक्षक ही मुख्य घटक थे और शिक्षा को द्विमुखी प्रक्रिया माना जाता था–

शिक्षक – शिक्षण प्रक्रिया – विद्याथी

किन्तु वर्तमान समय में शिक्षा एक बहु आयामी एवं बहुमुखी प्रक्रिया है। बालक का सर्वागीण विकास एवं चहुमुखी विकास करना शिक्षा का उद्देश्य माना गया है जोकि बौद्धिक ज्ञान एवं व्यावहारिक अनुभव के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। इस सन्दर्भ में आज विद्यालयों एवं शिक्षकों का दायित्व बहुत बढ़ गया हैं। विद्यालयों को मानवीय एवं भौतिक संसाधनों शिक्षक विद्याथी के अतिरिक्त समुदाय एवं समाज का सकारात्मक सहयोग भी अति आवश्यक है।

परिचय

अच्छी शिक्षा व्यवस्था के लिए मूलभूत आन्तरिक संरचना का बहुत बड़ा योगदान होता है। इसके अन्तर्गत संस्था भवन एवं आवश्यक सुविधायें, साजसज्जा, शैक्षिक उपकरण, पुस्तकालय एवं पर्यान्त वित्तीय प्रावधान होते है। ये सभी संसाधन तभी उपयोगी होते है जबकि इनके संचालन हेतु योग्य एवं सक्षम मानवीय संसाधन हो। भौतिक संसाधनों का तभी महत्व है जबकि इनका संधारण योग्य व्यक्तियों द्वारा हो। मानवीय संसाधन के अन्तर्गत प्राचार्य, व्याख्याता, शिक्षक, क्लर्क एवं चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी आते हैं। विद्यालयों में सम्पूर्ण व्यवस्था का विवेकपूर्ण संचालन प्राचार्य द्वारा ही किया जाता है। जोकि सभी के सहयोग से शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयासरत रहता है। शिक्षा का केन्द्रबिन्दु यदि बालक या छात्र है तो विद्यालय की धुरी प्राचार्य है जिसके गतिमान रहने से सभी अंग गतिशील रहते हैं। शिक्षाविदों ने प्राचार्य की तुलना जहाज के कप्तान से की है जोकि जहाज की दिशा निर्धारित करते हुए वांछित स्थान तक सफलता पूर्वक पहुँचाता है। इसी प्रकार एक प्राचार्य अपने विद्यालय की दशा और दिशा को नियंत्रित करते हुए शिक्षा

के उद्देश्यों की प्राप्ति में मुख्य उत्तरदायी व्यक्ति होता है। प्राचार्य को शिक्षा जगत का नेतृत्व करना होता है।

विद्यालय की भूमिका

प्रत्येक संस्था के उचित विकास के लिए एक स्वच्छ प्रशासन की आवश्यकता होती है। विद्यालय की समय–सारिणी से लेकर परीक्षा–परिणाम तैयार करने तक कार्यों का दायित्व विभाजन करना पड़ता है। जिसे लेकर कई बार प्रशासनिक गतिरोध पैदा हो जाता है, जो शैक्षिक नेतृत्व के विकास में बाधा बन जाता है। अतः हम उपरोक्त बाधाओं के अध्ययन से निष्कर्ष निकाल सकते है कि शैक्षिक नेतृत्व का कार्य एक दुष्कर कार्य बनता जा रहा है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य अप्रत्यक्ष समस्याएँ भी बाधाएँ उत्पन्न करती हैं। छात्र अध्यापकों के मध्य संघर्ष एवं कलह, संरक्षकों की स्वार्थप्रियता, संकीर्ण मनोवृत्ति, शिकायतें तथा छात्रों में फैली अराजकता शैक्षिक नेतृत्व की परेशानियों को बढ़ाती है। वास्तव में इन सभी परिस्थितियों में रहकर शैक्षिक नेतृत्व को कार्य करना पड़ता है। परन्तु जिस प्रकार सोना आग में तपकर कुन्दन बन जाता है। उसी तरह एक योग्य व कुशल नेतृत्व अपने विशिष्ट गुणों से इस स्थिति को सामने रखकर संस्था के विकास को बनाए रखता है। शैक्षिक नेतृत्व को सदा चिन्तनशील रहकर अपने कार्य को अन्जाम देते रहना चाहिए। शोधार्थी का शिक्षा जगत से गहरा सम्बन्ध रहा है और अब भी है शोधार्थी ने शिक्षा के सभी स्तरों (प्राथमिक माध्यमिक और महाविद्यालयीन) में कार्य किया है और प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया है। इसी तारतम्य में अनेक उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्राचार्यों से भी सम्पर्क एवं वार्तालाप हुआ हैं। जिसमें प्राचार्यों की समस्याओं की जानकारी प्राप्त हुई है।

पूर्ववर्त्ती शोध अध्ययनों का पुनरावलोकन–

विद्यालय व्यवस्था एवं शिक्षण प्रक्रिया पर बहुत से अनुसन्धान किए जा चुके हैं और वर्तमान समय में भी हो रहे हैं। किन्तु प्राचार्यों एवं प्रधानध्यापकों को केन्द्र बिन्दु मानकर उनकी कठिनाइयों एवं समस्याओं का अध्ययन अपेक्षाकृत बहुत कम किया गया है। शोधार्थी द्वारा प्रयास करने पर कुछ शोध अध्ययनों का संक्षिप्त विवरण प्राप्त हुआ है जो कि अग्रलिखित हैं–

(1) शाह, एम.आर.–"भारत में शैक्षिक प्रशासन की समस्याएँ" 1951 पी. एच.डी. शिक्षा बम्बई विश्वविद्यालय–इस अध्ययन का उद्देश्य भारत में शैक्षिक प्रशासन की समस्याओं का आलोचनात्मक अध्ययन करना था जोकि केवल पांच पक्षो तक सीमित था–

(1) शिक्षा से सम्बन्धित सामान्य सिद्धान्त

(2) शिक्षा से सम्बन्धित कानूनी प्रावधान (नियम)

(3) शिक्षा के अभिकरण केन्द्र, राज्य, स्थानीय एवं निजी संस्थाएँ

(4) इन संस्थाओं का समन्वय एवं प्रभाव

(5) प्रशासनिक समस्याएँ।

(2) माथुर यस.यस., "उत्तर प्रदेश के महानगरों में हायर सेकण्डरी स्कूलों में कार्यरत स्थानापन्न शिक्षकों से सम्बन्धित प्रशासनिक नीतियाँ" 1956 पी.एच.डी. शिक्षा आगरा विश्वविद्यालय, इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित था–

(अ) स्थानापन्न शिक्षकों की सेवाओं से सम्बन्धित वर्तमान प्रशासनिक नीतियों का सर्वेक्षण।

(ब) स्थानापन्न शिक्षकों की सेवाओं की व्याख्या एवं शिक्षा पर इनके प्रभाव को ज्ञात करना।

(स) इन शिक्षकों की कमियों एवं सेवाओं में उत्पन्न समस्याओं को ज्ञात करना।

(द) स्थानापन्न शिक्षक सेवाओं में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव देना।

(3) खानोलकर डी.एस., "बहुउद्देश्यीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का समीक्षात्मक अध्ययन" 1960 पी.एच. डी. शिक्षा बाम्बे विश्वविद्यालय, इस अध्ययन का उद्देश्य निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर ज्ञात करना था–

(अ) भारत में माध्यमिक शिक्षा के विशिष्ट कार्य एवं उद्देश्य क्या रहे हैं?

(ब) विदेशों में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर किए गए नवाचार एवं भारत में इनका प्रभाव क्या है?

(स) भारत में बहुउद्देश्यीय माध्यमिक विद्यालयों के संचालन के सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्य क्या हैं?

(4) वर्तक, आर.एम., "शैक्षिक संगठन, प्रशासन एवं समस्याओं का आलोचनात्मक अध्ययन–महाराष्ट्र प्रदेश के अन्तर्गत जिला परिषद एवं पंचायत समितियों के 1961 अधिनियम के विशेष सन्दर्भ में" 1971 पी.एच.डी. (शिक्षा) यस.यन. डी.टी. बाम्बे। इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य थे–

(अ) स्थानीय संस्थाओं के शैक्षिक प्रशासन का मूल्यांकन करना।

(ब) बलवन्त राय मेहता कमेटी द्वारा सुझा ये गये शैक्षिक प्रशासन में प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण प्रक्रिया के क्रियान्वयन की स्थिति।

(स) प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था पर इसका प्रभाव।

(द) प्रदेश के ग्रामीण शैक्षिक विकास में इसका योगदान।

(य) इस योजना के कमजोर पक्षों को ज्ञात करना तथा इन्हें दूर करने हेत सुझाव देना।

(5) व्यास जे.पी., "भारतीय शिक्षा में केन्द्र सरकार की भूमिका (सन् 1813 से 1961 की अवधि में) 1963 पी. एच.डी. शिक्षा सागर विश्वविद्यालय, इस अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे–

(अ) भारत सरकार की सन् 1813 से 1961 तक की शैक्षिक नीतियों का अध्ययन करना।

(ब) उन तथ्यों को ज्ञात करना जिन्होंने भारत सरकार की शिक्षा नीतियो को प्रभावित किया।

(स) शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत अन्य सस्थाओं एवं भारत सरकार के बीच सह सम्बन्ध बनाने हेतु समुचित सुझाव देना।

(6) यस. भोरास्कर, "शैक्षिक प्रशासन के दार्शनिक पक्षों के नये उपागम" 1964 पी.एच.डी. शिक्षा, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य थे–

(अ) शैक्षिक प्रशासन की नीतियों एवं उनके क्रियान्वयन की स्थिति ज्ञातकरना।

(ब) शिक्षा व्यवस्था में प्रशासनिक दर्शन की प्रवृत्ति का मूल्यांकन करना

एवं वर्तमान व्यवस्था में प्रशासकों की अभिवृत्ति ज्ञान करना।

(स) प्रजातांत्रिक प्रशासनिक व्यवस्था के सम्बन्ध में प्रशासकों की जागरूकता ज्ञात करना।

(7) प्रमससए ठण ष्ज्मंबीमत च्ंतजपबपचंजपवद पद `बीववस ।कउपदपेजतंजपवद पद ळतमंजमत ठवउसमदलष्ण उपरोक्त विषय पर श्री एजकेलने पी.एच.डी. स्तर का शोधकार्य बाम्बे विश्वविद्यालय में सम्पन्न किया और 1966 के इन्हें शोध उपाधि प्रदान की गई। इस शोध कार्य के निम्नलिखित उद्देश्य थे–

(अ) शिक्षकों की दृष्टि से शैक्षिक प्रशासन में सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक सहभागिता का अध्ययन करना।

(ब) प्रशासन में शिक्षकों की प्रभावी सहभागिता की निश्चित स्थितियों एव परिस्थितियों की व्याख्या करना। इस शोध अध्ययन के द्वारा जो निष्कर्ष प्राप्त हुए है, वे इस प्रकार है–

(1) शैक्षिक प्रशासन में पिछले बीस वर्षो से प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण मान्य किया जा रहा है। इस दिशा में परिवर्तन के साक्ष्य स्पष्ट दिखाई दे रहे है।

(2) प्रशासन के सभी स्तरों पर शिक्षकों की सहभागिता नहीं पाई जाती है।

(3) शिक्षकों द्वारा सहयोग एवं सहभागिता, केवल विस्तृत एवं सामान्य स्तर के मसलों पर ही केन्द्रित हैं।

(4) विद्यालय प्रशासन से सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन की तत्कालिक आवश्यकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य **सीतामणि जिले** के शासकीय एवं अशासकीय, उच्च तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्राचार्यों की प्रशासनिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना था। शोधार्थी ने रीवा संभाग के शासकीय प्राचार्यों एवं अशासकीय प्राचार्यों की प्रशासनिक समस्याओं का विस्तृत अध्ययन करके विश्लेषण किया है तथा सांख्यकीय गणना प्रस्तुत की है। इन दोनों विश्लेषणों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किए गए है। जोकि निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत प्रस्तुत किए जा रहे हैं–

संदर्भ

- पाण्डेय, रामशकल, "शैक्षिक नियोजन एवं वित्तप्रबन्धन" आगरा अग्रवाल प्रकाशन, 2012,
- शर्मा, ओ.पी., "शैक्षिक अनुसन्धान एवं सांख्यिकी" आगरा अग्रवाल प्रकाशन, 2001,
- मिश्रा, डॉ. महेन्द्र कुमार, "शैक्षिक प्रबन्धन की बिधियाँ" नई दिल्ली अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, 2009,
- मुहम्मद, सुलेमान, मनोविज्ञान, समाज शास्त्र तथा शिक्षा में शोध बिधियाँ" पटना जनरल बुक एजेन्सी, 2005,
- श्रीवास्तव, डी.यन., "अनुसन्धान की बिधियाँ" आगरा साहित्य भवन, 2001
- भटनागर, सुरेश, "शिक्षा अनुसन्धान" आगरा विनोद पुस्तक मंदिर, 2005
- मजूमदार, ए.के., "गुजरात के चालुक्य" बडौदा, भारतीय विद्यास्टडीज, 1956
- गुप्ता, डॉ. यस.पी. एवं डॉ. अलका गुप्ता, "आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्यायें" इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन, 2001
- गुप्ता, डॉ. यस.पी., "आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन" इलाहाबाद शारदा, पुस्तक भवन, 2008
- जोशी, डॉ. रजनी, "विद्यालय प्रशासन एवं संगठन" इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन, 2008
- जैन, डॉ. कैलाश चन्द्र, "प्राचीन भारतीय सामाजिक संस्थायें" भोपाल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 1971
- वर्मा, जे.पी., "शैक्षिक प्रबन्धन" जयपुर राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2001
- के.ओड़, डॉ. लक्ष्मीकान्त, "शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि" जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2008
- त्यागी, जी.यस.डी. एवं पाठक पी.डी., "भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्यायें" आगरा विनोद पुस्तक मंदिर, 2004–05,